بسم الله الرحمن الرحيم

ان الدين عند الله الاسلام

لا اله الا الله محمد رسول الله

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

01 June 2018 (16 Ramadan 1439 AH)

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतबा

विषय:-

"रमज़ान और अच्छे शिष्टाचार"।

بسم الله الرحمن الرحيم

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया :**"रमज़ान और अच्छे शिष्टाचार"।**

रमज़ान का महीना हमें अच्छे शिष्टाचार के लिए प्रेरित करता है। एक हदीस में, अल्लाह के दूत, हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने कहा:

(१) जो कोई जाली भाषण और बुरे कार्यों को नहीं छोड़ता, अल्लाह को उसके भोजन और पेय छोड़ने से कोई मतलब नहीं है (यानी अल्लाह उनके उपवास को स्वीकार नहीं करेगा।) (बुखारी)।

(२) उपवास का मतलब सिर्फ खाना-पीना छोड़ना नहीं है, बल्कि उपवास का मतलब है बेकार भाषण और अश्लील आचरण को छोड़ना। अगर कोई आपका अपमान करता है या आपके साथ अज्ञानी ढंग से व्यवहार करता है, तो कहें, 'मैं उपवास कर रहा हूं, मैं उपवास कर रहा हूं।' (बुखारी)

ये दो कथन सत्य और अच्छे शिष्टाचार के महत्व की ओर इशारा करते हैं। इस प्रकार, यह धन्य महीना, हमें न केवल खाने-पीने की चीजों से परहेज करना सिखाता है, लेकिन यह भी सिखाता है, की ऐसी धारणाओं और कार्यों से बचना चाहिए ,जो लोगों को चोट पहुंचा सकते हैं और उनके अधिकारों का उल्लंघन कर सकते हैं।

अल्लाह के दूत (स अ व स) ने कहा, जब एक सच्चे विश्वासी का वर्णन करते समय की: "एक मुसलमान जिसकी ज़ुबान और हाथ से सभी मुसलमान सुरक्षित हैं।" (बुखारी)

इसलिए, यह हमारे ऊपर है, कि हम अपनी कमियों की जांच करें, और सुधार की तलाश करें और खुद को हमारे पैगंबर (स अ व स) के (सुन्नत) रास्ते के करीब लाएं, साथ ही उत्कृष्टता की आकांक्षा निम्नलिखित शब्दों में वर्णित करना (पवित्र पैगंबर (स अ व स) के): "मैं जन्नत (स्वर्ग) में एक घर का आश्वासन देता हूं, उसके लिए जो बहस करना छोड़ देता है, भले ही वह सही हो; और मैं जन्नत के बीच में घर का आश्वासन देता हूं, जो मजाक के लिए भी झूठ बोलना छोड़ देता है; और मैं जन्नत के सबसे ऊंचे हिस्से में एक घर का आश्वासन देता हूं, उसके लिए जो अच्छे शिष्टाचार रखते हैं। " (अबू दाऊद)।

उत्पीड़न, बेशर्मी / शर्मनाक व्यवहार, ईर्षा, नफ़रत रखते हुए अपने मुसलमान भाइयों और बहनों के खिलाफ -उसे टाल देना चाहिए ,रिबत करते हुए (वृथा भाषण / अपने भाई की पीठ के पीछे उनके बारे में बात करना), दो लोगों के बीच झगड़ा आरंभ करना, विवाद होने की बात पर बहस करना, जो बुरी तरह से समाप्त होगी (जैसे अपराध आदि) और अन्य झूठ, हमारे उपवास के पुरस्कार की अमान्यता से हम अपने आप को बचा सकते हैं क्योंकि हमारे सज्जन पैगंबर (स अ व स) ने कहा है : "ऐसे लोग हैं, जो

उपवास करते हैं और भूख और प्यास के अलावा उनके उपवास से उन्हें कुछ नहीं मिलता। "(इब्न माजाह, अहमद)

इन्सान (धार्मिकता और ईमानदारी) के लिए लड़ना चाहिए और रिया (डींग) से दूर रहना चाहिए। इन्सान का अर्थ है इबादत (अल्लाह की इबादत) करना जैसे कि हम हमारे सामने अल्लाह को देखते हैं, भले ही हम उसे न देखें, लेकिन (हम जानते हैं कि) वह हमारे सहित सब कुछ देखता है।

इसलिए, जब हम उपवास करते हैं, तो हमारे पास स्वयं को देखने / उनकी सुरक्षा करने का गुण होना चाहिए और जो डींग हम कर सकते थे उससे दूर रहकर। इसीलिए, अल्लाह गौरवान्वित हदीस-ए-कुद्सी में कहता है : "उपवास मेरे लिए है और मैं इसके लिए इनाम दूंगा।" (बुखारी)। अल्लाह गौरवान्वित ने उपवास को एक विशेष कार्य के रूप में बनाया है (एक विशिष्टता उसके लिए) जब वह कहता है: "उपवास मेरे लिए है" क्योंकि अल्लाह को छोड़कर कोई नहीं जानता कि आप उपवास में हैं या नहीं।

रमज़ान के महीने में, हम मुसलमानों की सद्भाव और एकता को पाते हैं। हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने कहा: "उपवास वह दिन है जिस दिन लोग उपवास करते हैं, उपवास तोड़ने का वह दिन है जब लोग अपना उपवास तोड़ते हैं, और बलिदान वह दिन होता है जिस दिन लोग बलिदान करते हैं।" (तिर्मिधि)।

इसलिए इस हदीस की व्याख्या यह है, कि हमें उपवास का पालन करना चाहिए और जमात के साथ उपवास तोड़ो (कहने का मतलब है की समूह में) और अधिकांश लोग, मानो इफ्तार रमज़ान के महीने में इबादत का एक कार्य बन जाता है जिसे कौम में मनाया जाता है (व्रत तोड़ना) इबादत का एक कार्य समुदाय में मनाया जाता है जहाँ इससे प्राप्त करने के कई आशीर्वाद हैं, अन्य इबादत की तरह जैसे की समूह प्राथनाएँ, जहाँ विश्वासी स्वयं को कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा पाते हैं। और इफ्तारी हमें उपवास के तोड़ने के समय एक विशिष्ट क्षण में यह भी दिखाता है, की सभी मुसलमान अपना उपवास एक ही समय में तोड़ते हैं, और हम इस धन्य महीने में, एक उम्मत (समाज) की सद्भाव की अनुभूति को बढ़ाने की क्षमता रखते है, इस तथ्य से, कि हम उपवास का पालन करते हैं और एक ही समय में एक साथ उपवास तोड़ते हैं। हमें मुसलमानों की स्थिति के बारे में बढ़ती जागरूकता की भावना है और इस परीक्षा में खरे उतरना क्योंकि उपवास के दौरान, एक मुसलमान को अनुभूति और अनुभव है, की उनके जरूरतमंद भाई-बहन क्या महसूस करते हैं, जब वे दायित्व (गरीबी के कारण) में कई दिनों तक बिना भोजन के रहते हैं।

वास्तव में, मुसलमानों की एकता और उनके सहयोग और पारस्परिक सहायता में से एक प्रसिद्ध नींव है जिस पर इस्लाम बनाया गया था - जैसा कि अल्लाह कहता है:

> **"और सभी एक साथ अल्लाह की रस्सी को मजबूती से पकड़ें और विभाजित न हों।"**
> **(अल-इमरान 3: 104)।**

सभी मुसलमानों को, विशेष रूप से जमात उल साहिह अल इस्लाम के मेरे शिष्यों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि जब उन्होंने जमात उल साहिह अल इस्लाम को एकीकृत किया है, तो इसका मतलब

यह नहीं है, कि वे अल्लाह या इस विनम्र सेवक को नौकर के रूप में और अल्लाह के ख़लीफ़ा पर एहसान कर रहें है। ध्यान रखें, कि आपने अल्लाह के संकेतों को पहचान लिया है और अपने आधार पर उनके खलीफातुल्लाह की सच्चाई से सहमत हैं। किसी ने आपको स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं किया हैं। और इस प्रकार, इसका मतलब यह नहीं है, कि जब आप जमात उल साहिह अल इस्लाम को एकीकृत करते हैं, कि सब कुछ एक बार में ही आपके लिए एकदम सही हो जाएगा (अर्थात, आपका जीवन एक बार में ही सुलझ जाएगा, हर समस्या का समाधान हो जाएगा)। वहाँ बहुत सारे बलिदान और बहुत सारे सुधार हैं- सच्चे मुसलमान, सहीह अल इस्लाम बनने के लिए, जिसे आपको खुद में लाना है।

जिन्होंने इस विनम्र सेवक (अल्लाह के) को खलीफातुल्लाह के रूप में मान्यता दी है, जमात उल सहिह अल इस्लाम को एकीकृत किया है, और बाद में निराश हुए और शैतान के दूतों द्वारा उन्हें सही मार्ग से भटकाने के लिए आश्वस्त किया गया, और इस तरह से जमात उल सहिह अल इस्लाम को छोड़ दिया, इसलिए आप को अभिशाप है। हमेशा ध्यान रखें, कि विश्वास करना और बाद में अल्लाह पर अपने विश्वास को अस्वीकार करना और आपके युग के अल्लाह के दूत आप के लिए तबाही लायेंगें, जब तक आप पश्चाताप और अपने आप पर सुधार नहीं करते हैं।

जमात अहमदिया और अन्य लोग जमात उल साहिह अल इस्लाम से लोगों को निकालने के अपने अभियान को जारी रखते हैं, और यहां तक कि पाखंडी, सांप भी हैं, जमात उल साहिह अल इस्लाम में भी हैं, जो अल्लाह की सच्चाई पर और उनके खलीफातुल्लाह पर यकीन नहीं करते हैं। इसलिए, सावधान रहें, सचेत रहें, ऐसा न हो कि अल्लाह की सजा आप पर बीते, जब तक आप पश्चाताप नहीं करते और सच्चे मुसलमान नहीं बन जाते, तब तक आप खुद पर नियंत्रण रखें।

मेरे सभी सच्चे शिष्यों, अगर आप अपने भीतर गहन में अपने आपको, मेरे सच्चे शिष्यों में से पाते हो, अतः आपको एकजुट होकर रहना चाहिए और ढोंगियों को नहीं देना चाहिए और जो लोग अल्लाह के जमात को नुकसान पहुंचाना के लिए ,जमात उल साहिह अल इस्लाम में अव्यवस्था पैदा करने की कोशिश करते हैं । अगर आप सच में ईमानदार हो, तो चिंता मत करो, यह अल्लाह है, जो आपके और आपके ईमान (विश्वास) की रक्षा करेगा, लेकिन अगर आप ढोंगी बन गए हैं, उस आधार पर अल्लाह खुद, आपको उसके जमात (जमात उल साहिह अल इस्लाम) से निकाल देगा।

जमात उल साहिह अल इस्लाम एक ऐसा जमात नहीं है, जो लोगों को अपनी तह से बाहर निकाल दे, लेकिन यह एक ऐसा जमात है, जिसमें अल्लाह है, जो उन सभी को फेंक देगा / बाहर कर देगा, जो ईमानदार नहीं हैं और जो ढोंगी हैं; जब यह होता हैं ,इन लोगों को अपने दम पर प्रस्थान कर लेना चाहिए, सच्चे विश्वासियों को निराशा नहीं होनी चाहिए, बल्कि, इसके विपरीत, उन्हें अपने विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए। अल्लाह तआला उनको ऐसी आज़माइशों के ज़रिये परखता है। इसीलिए, अल्लाह कहता है, अल्लाह की रस्सी को ज़ोर से पकड़े रखो और विभाजित मत हो, वरना आप हारे हुए में से होंगे और आपकी परिस्थितियाँ उत्तरदायी / दुखद / दयनीय होंगी।

[टिपण्णी : इसके अलावा, खलीफातुल्लाह, हज़रत मुनीर ए. अज़ीम (अ त ब अ) ने तथ्य के बारे में बात की, कि उन्होंने कभी भी अपने परिवार को उन पर विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं किया। उन्होंने कभी नहीं उनके दिव्य अभिव्यक्तियों (जो वह प्राप्त कर रहें थे) के बारे में सूचित नहीं किया। यह वर्ष 2000 की ओर है, जब समस्याओं का उपज होना शुरू हुआ (मॉरीशस के पूर्व अमीर द्वारा दुष्ट गुप्त योजन किये गए, सेशेल्स जमात (अहमदिया) के विषय में, जो कि उनके परिवार के सदस्य थे, सवाल पूछने लगे। और खलीफातुल्लाह (अ त ब अ) ने भी इसके बारे में बात की, कि आदम का एक बेटा उसके खिलाफ किस तरह से साज़िश का निर्माण करना शुरू करने लगा, जबकि आदम के दूसरे बेटे ने उन पर विश्वास किया और वह ईश्वरीय रहस्योद्घाटन पर ध्यान देने लगा, जो उस समय पर उसे प्राप्त हुई थी। लेकिन अब, ये सब कहाँ चला गया है?

इसी तरह, उन्होंने (अ त ब अ) भी एक रहस्योद्घाटन के बारे में याद दिलाया, जो उन्हें दिव्य अभिव्यक्ति की शुरुआत में प्राप्त हुआ थी, जिसके द्वारा अल्लाह ने उसे बताया, कि बहुत सारे लोग आएंगे, (बुद्धिमान, धर्मनिष्ठ लोग की तरह) कपट वेश बनाना, मानो निर्दोष लोग कहेंगे, कि वे मानते हैं, कि जब सच में उन्हें सच्चा विश्वास नहीं होता है और वे अल्लाह के, खलीफातुल्लाह के और जमात उल साहिह अल इस्लाम के दुश्मनों को जानकारी बेचेंगे / देगें। हज़रत खलीफ़ातुल्लाह (अ त ब अ) ने संक्षेप में भी उल्लेख किया है, उनके शिष्यों में से एक ने एक ख्वाब में जमात में सांप/ सांपों के बारे में देखा ...]

मेरे उपदेश के विषय पर वापस जानने के लिए ... जैसा कि अल्लाह कुरान में कहता है:

"और सभी एक साथ अल्लाह की रस्सी को मजबूती से पकड़ें और विभाजित न हों।" (अल-इमरान 3: 104)।

और पुरुष और महिला विश्वासी एक दूसरे के लिए सहयोगी और रक्षक हैं।

इस प्रकार, हम देखते हैं कि इस्लाम दिलों के एकत्रीकरण पर और इज्तिमा को प्रोत्साहित करने पर ज़ोर देता है (समुदाय के रूप में)। यह एकता केवल रमज़ान के महीने में ही नहीं होनी चाहिए, लेकिन यह आने वाले महीनों में और इबादत के अन्य कार्यों के लिए भी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, अल्लाह के दूत (स अ व स) ने हमें दैनिक प्रार्थना (बा-जमात) समूह में पाँच बार करने का आदेश दिया है, और यह अकेले प्रार्थना करने से 27 गुना अधिक फायदेमंद है। इसी तरह, यह सामूहिक भावना हज में प्रकट होती है, और इसलिए धर्म-संप्रदाय में यह आशीर्वाद रखा गया है।

इसी तरह, हमारे दैनिक कार्यों में, खाने की तरह, इस्लाम समुदाय की एकता को प्रदर्शित करता है। तो, **वहशी इब्न हर्ब (र अ)** वर्णन करते हैं: अल्लाह के दूत (स अ व स) के कुछ सहाबियों ने कहा: "हम जो खाते हैं लेकिन हम उससे संतुष्ट नहीं हैं।" उन्होंने (स अ व स) ने कहा, "शायद आप अलग से खाते हैं।" सहाबियों ने स्वीकारात्मक तरीके से जवाब दिया। फिर उन्होंने कहा: “एक साथ खाओ और अपने खाने के ऊपर अल्लाह का नाम ज़िक्र करो। यह आपके लिए धन्य होगा। ”(अबू दाऊद)

एक दिन अल्लाह के रसूल (स अ व स) अपने सहाबियों के पास गए, जो अलग-अलग मंडलियों में बिखरे हुए थे और उनसे कहा, “मैं आपको अलग बैठे हुए क्यों देखूं?” इसके अलावा, **अबू तलबः अल-खुशानि (र अ)** ने कहा:“ जब हम एक जगह (एक यात्रा के दौरान) पर रुक जाते थे, हम रास्तों में और घाटियों में, मंडलियों में अलग हो जाते थे। तो अल्लाह के दूत (स अ व स) ने कहा: "वास्तव में तुम्हारा ये रास्तों में और घाटियों में विभाजित होकर बैठना सचमुच शैतान से हैं।” इसलिए, इसके बाद हम एक जगह नहीं बैठते थे (एक यात्रा पर) इसके अतिरिक्त हम एक साथ एक दूसरे के करीब रहते थे, इस तरह कि अगर कोई जाल फेंका जाए, तो वह हम सभी को उसमे घेर ले। ”(अबू दाऊद)।

उपवास आपके स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है और इसमें कई चिकित्सक लाभ हैं और मुसलमानों को कैसे अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना हैं और एक मजबूत शरीर रखना हैं इसे भी सिखाता है। अल्लाह के दूत (स अ व स) ने कहा: "एक कमजोर आस्तिक की तुलना में अल्लाह एक मजबूत आस्तिक को बेहतर और अधिक प्यार करता है, और दोनों ही अच्छा है।” (मुस्लिम)।

अल्लाह कुरान में कहता है:

> **“वास्तव में, यह तुम्हारा धर्म हैं, यह एक ही धर्म है, और मैं आपका प्रभु हूं, इसलिए मेरी इबादत करो।”(अल-अंबिया 21: 93)।**

और अल्लाह आगे कहता है: **"लेकिन सभी आस्तिक एक दूसरे के भाई हैं।"** (अल-हुजुरत 49: 11)।

अल्लाह के दूत (स अ व स) ने मुसलमानों के बीच के संबंधों के स्वरूप को हदीस में स्पष्ट किया हैं: “निश्चित रूप से सभी मुसलमान एक शरीर के समान हैं। अगर इसका कोई एक सदस्य एक बीमारी से पीड़ित हैं, तो पूरा शरीर अनिद्राभाव से और बुखार से पीड़ित हो जाता है।" (बुखारी, मुस्लिम, तिरमिधि)।

अंत में, हम अल्लाह से खुद को बेहतर के लिए सुधारने की क्षमता देने की माँग करते हैं और हमारे पापों को क्षमा करें और सही रास्ते पर हमारा मार्गदर्शन करें।

आमीन, सुम्मा आमीन, या रब्बुल आलमीन।